स्त्री-कविता
पहचान और द्वंद्व

[पाठ और संवाद]

रेखा सेठी

राजकमल पेपरबैक्स

राजकमल पेपरबैक्स में
पहला संस्करण : 2019

© रेखा सेठी

राजकमल पेपरबैक्स : उत्कृष्ट साहित्य के जनसुलभ संस्करण

राजकमल प्रकाशन प्रा. लि.
1-बी, नेताजी सुभाष मार्ग, दरियागंज
नई दिल्ली-110 002
द्वारा प्रकाशित

शाखाएँ : अशोक राजपथ, साइंस कॉलेज के सामने, पटना-800 006
पहली मंजिल, दरबारी बिल्डिंग, महात्मा गांधी मार्ग, इलाहाबाद-211 001
36 ए, शेक्सपियर सरणी, कोलकाता-700 017
वेबसाइट : www.rajkamalprakashan.com
ई-मेल : info@rajkamalprakashan.com

बी.के. ऑफसेट
नवीन शाहदरा, दिल्ली-110 032
द्वारा मुद्रित

मूल्य : ₹299

STREE KAVITA : PEHCHAAN AUR DWANDWA
Interview & Introduction by Rekha Sethi

ISBN : 978-93-89577-24-2

क्रम

कुछ कही कुछ अनकही 9

पाठ और संवाद

गगन गिल 29
तुम सूई में से निकलती हो 30
स्त्री-लेखन एक मोनोलॉग के रूप में निकला है 32

कात्यायनी 42
क्या स्थगित कर दें कविता? 43
सामाजिक बदलाव की मुख्य रणभूमि राजनीतिक अधिरचना ही होती है 45

अनामिका 61
पतिव्रता 62
स्त्री, स्त्री होने के सिवा मनुष्य भी तो है! 65

सविता सिंह 77
रात, नींद सपने और स्त्री 78
स्त्री-कविता सामूहिक मुक्ति का संघर्षरत स्वप्न है 79

नीलेश रघुवंशी 100
पानी का स्वाद 101
अपनी ज़मीन से संघर्ष और सामूहिक फसल का स्वप्न है कविता मेरे लिए! 103

निर्मला पुतुल 116
उतनी ही जनमेगी निर्मला पुतुल! 117
आदिवासी संस्कृति एवं परम्परा बिलकुल अलग है 119

सुशीला टाकभौरे 125
सुनो विक्रम 126
मुख्यधारा के 'स्त्रीवाद' में दलित स्त्रियों को स्थान नहीं है... 128

कुछ और संवाद

सुमन केशरी 147
शकुंतला 148
यह समय स्त्री रचनाशीलता का वसंत है... 149

विपिन चौधरी 156
दस्यु सुन्दरी 157
स्त्री-कविता उसके स्त्री होने का ही पुख्ता और लिखित प्रमाण है 159

ज्योति चावला 163
तुम्हारी आँखें हमें सुकून देती हैं इरोम 164
स्त्री-कविता : स्त्री पक्ष और उसके पार 167

पंखुरी सिन्हा 172
लोक धारणाएँ 173
स्त्री-कविता : उपलब्धियाँ और चुनौतियाँ 174

अनुपम सिंह 177
थोड़ा-थोड़ा कुछ और भी 178
स्त्रीवादी कविता ज़्यादा समावेशी है 182

जसिंता केरकेट्टा 187
बाँध से बँधी धान की बालियाँ 188
कविता स्त्री-पुरुष बहस से कहीं अधिक व्यापक है 189

स्त्री-कविता और पुरुष स्वर

अशोक वाजपेयी 195
अगर मैं हो पाता 196
स्त्री-कविता की अपनी अलग पहचान नहीं है 197

लीलाधर मंडलोई 200
क्षमायचना 201
समावेशी दृष्टि होनी चाहिए 203

मंगलेश डबराल 209
माँ का नमस्कार 210
'पार्टनर तुम्हारी पॉलिटिक्स क्या है?' 211

पवन करण 214
एक स्त्री मेरे भीतर 215
जीवन में स्त्री स्वयं एक प्रतिमान है 217

मदन कश्यप 222
गोलबन्द स्त्रियों की नज़्म 223
नए काव्यशास्त्र की ज़रूरत 225

जितेन्द्र श्रीवास्तव 228
परवीन बॉबी 229
यह 'थेरीगाथा' की भूमि है 231

यतीन्द्र मिश्र 234
गिरिजा 235
स्त्री का स्वर पुरुष के प्रतिरोध के साथ क़दमताल करता हो! 236

अच्युतानंद मिश्र 240
स्त्रियाँ 241
समाज का आलोचनात्मक विवेक हैं स्त्रियाँ 243